National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024; 1(52): 222-224
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.टी.लतामंगेश
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
तिरुपती – 517507, आंध्रप्रदेश

Correspondence:
डॉ.टी.लतामंगेश
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
तिरुपती – 517507, आंध्रप्रदेश

नरेन्द्र कोहली के व्यंग्य कहानियों में राजनैतिक विसंगतियाँ

डॉ. टी. लतामंगेश

प्रस्तावना – हिंदी साहित्य में व्यंग्य एक ऐसा सशक्त माध्यम रहा है, जिसके द्वारा समाज कि विडंबनाओं, भ्रष्टाचार, और राजनैतिक ढकोसलों पर तीखा प्रहार किया जाता है। व्यंग्य का आरंभ हिन्दी साहित्य में कबीर से ही माना जाता है। उनके बाद आधुनिक हिन्दी में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, अमृतराय लतीफ घोंघी आदि को प्रतिष्ठित व्यंग्यकार मानते है। नरेन्द्र कोहली के व्यंग्य लेखन के मूल में व्यक्तित्व जीवन की पीडाएँ और दञ्जन्य आक्रोश दिखाई देता है। प्रत्येक समाज में विसंगतियों, अन्याय भ्रष्टाचार तथा इसी प्रकार की दूसरी अवस्था प्रवृत्तियों का होना स्वाभाविक है। किसी भी रचनाकार की प्रेरणा का स्त्रोत समाज में व्याप्त ये विसंगतियों होती है। समस्याओं के प्रति जागरुक नरेन्द्र कोहली ने सूक्ष्म व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से शासनतंत्र को चेतावनी दी है। इस आधुनिक युग में व्यंग्य की विषयवस्तु आम पाठकों के मन में दबी हुई पीडा, कसक एवं कुंठाएँ ही तो है। नरेन्द्र कोहली ने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, विकृति और विद्रूपताओं को बहुत ही सफलतापूर्वक चित्रित किया है।

राजनैतिक विसंगतियाँ -

हर देश की सामाजिक संस्कृतिक परिस्थितियों को प्रभावित करनेवाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है राजनीतिक परिवेश। प्रजातंत्रिक व्यवस्था प्रत्येक नागरिक से सूझबूझ की अपेक्षा करती है, लेकिन यहाँ के अधिकांश आदमी आज भी बूनियादी शिक्षा से वांचित है। नेता जनता को, देश को अशिक्षित ही रखना चाहते है। राजनीति के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों ह्रास के कारण स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक व्यवस्था कलुषित हो गयी है। आजादी के पूर्व के दिनों में राजनीतिक क्षेत्र की अपनी पवित्रता थी। अपने मूल्यों के लिए तब के नेता अपनी जान की बाज़ी लगाने के लिए तैयार रहते थे वे राजनीति को देश सेवा के लिए सच्चे साधन मानते हुए बहुत ईमानदारी से उसका पालन करते थे। उनमें सत्ता हथियाने के लोभ के बजाय देश को प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ाने की उत्सुकता थी। कोई भी राजनेता को सत्ता में आगे बैठने के लिए यह कतई आवश्यक नहीं कि वह योग्य ही हो। देश और राज्य की समस्याओं पर विचार-विनिमय करने निमित्त लोकसभा व विधानसभाएं है। लेकिन वे इस प्रकार के नेताओं की वजह से चप्पलबाजी हाथापाई, गाली-गलौज तथा अराजकता के अड्डे बन गए है। नरेन्द्र कोहली अनेक परिदृश्यों को व्यंग्य की दृष्टी से जब देखा है तो कई प्रकार की विसंगतियाँ अपने आप उद्घाटित होती गई है।

मूल्यों की गिरावट -

वर्तमान राजनीतिक पार्टियाँ अपनी राजनीतिक क्षेत्र की मूल्यों को तिलांजलि दे रही है। आज के राजनीतिक क्षेत्र में चोरी, डकौती तथा हत्या के मामले में जेल की सजा काटनेवालों की संख्या कम नहीं

है। ऐसे लोग सांसद और विधायक चुने जा रहे है। बिगडते हुए राजनीतिक माहौल पर व्यंग्यबाण चलाते हुए 'चोरी' नामक व्यंग्य रचना को नरेन्द्र कोहली ने किया।

जब नेता चुनाव जीतकर मंत्री बनता है तब जनता की सेवा करने के मुखर जाता है। अपने को ही भ्रष्टतम मंत्री साबित करने को ललायित होते है। पैसा हड़पने के मामले में आगे-पीछे नहीं देखते। पकडे जाने पर भी शर्मिंदगी महसूस किए बिना अपने कार्य का समर्थन करते है। राजनेताओं में गिरते नैतिकमूल्यों का चित्रण करते हुए कोहली ने अपनी 'इदम न मम' नामक रचना में संवाद शैली में व्यंग्य किया है-

"मैंने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। फिर से प्रश्न किया, "यदि रुपया सुखराम का या तो पुलिस उसे पकड क्यों रही है? केवल इसलिए कि वह अपना पैसा अपने घर में रखता है?"

"नहीं। वह पैसा ग़लत तरीके से कमाया गया है। यह उसे नहीं कमाना चाहिए था।"

"नहीं कमाना चाहिए था का क्या अर्थ ? क्यों न कमाए?" मैंने कहा, "कोई कमा सके तो

"वह सब पैसा उत्कोच में लिया गया है।" रामलुभाया ने कहा, "दलाली में लिया गया है।"

"तो रिश्वत और दलाली कमाई नहीं होती?"

"नहीं वह कमाई नहीं है।" उसने उत्तर दिया।

"तो जो पैसा सुखराम ने नहीं कमाया, वह उसका नहीं है।"

"हाँ। वह उसका नहीं है।"

"तो यही तो सुख राम कह रहा है कि वह पैसा उसका नहीं है।" मैंने कहा, "और तुम उससे स्पष्ट हो रहे हो। वह सच कह रहा है कि वह धन उसका नहीं, जनता का है। और तुम लोग उसकी बात नहीं मान रहे हो।"

राजनीति की दोहरी मानसिकता पर प्रहार :

नरेंद्र कोहली की कहानियों में राजनीतिक नेताओं की कथनी और करनी के बीच की खाई को बार-बार उजागर किया गया है। वे नेताओं के आदर्शवादी भाषणों और व्यावहारिक भ्रष्ट आचरण के बीच विरोधाभास को तीखे व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। उदाहरणस्वरूप, वे दिखाते हैं कि किस प्रकार नेता जनसेवा की बात करते हैं, लेकिन वास्तविकता में वे अपने और अपने परिवार के हित साधने में लगे रहते हैं।

लोकतंत्र का मज़ाक :

कोहली की व्यंग्य कथाएँ यह भी स्पष्ट करती हैं कि लोकतंत्र के नाम पर आम जनता को केवल झूठे वादों और भावनात्मक नारों से बहलाया जाता है। चुनावी समय में जनता को 'राजा' मानने वाले नेता, चुनाव जीतते ही उसे भूल जाते हैं। 'ईमानदार नेता' और 'जनसेवक' जैसे पदों का उन्होंने अपनी कहानियों में बार-बार उपहास किया है।

नौकरशाही और राजनीतिक गठजोड़ :

उनकी कहानियाँ सिर्फ नेताओं तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि नौकरशाही और राजनीति के गठजोड़ को भी उजागर करती हैं। अफसरशाही किस तरह से नेताओं की कठपुतली बन जाती है, यह उनकी कई कहानियों में देखा जा सकता है। कोहली इन संस्थाओं की स्वायत्तता और नैतिकता पर गंभीर सवाल खड़े करते हैं, लेकिन व्यंग्य की शैली में।

भ्रष्टाचार और मूल्यहीनता :

नरेंद्र कोहली के व्यंग्य में भ्रष्टाचार की समस्या केवल आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक पतन की ओर भी संकेत करती है। उनके पात्र कभी-कभी इतने 'व्यवस्थित' ढंग से भ्रष्ट होते हैं कि उनकी गतिविधियाँ हास्यास्पद हो जाती हैं, परन्तु यही हास्य पाठकों को गहराई से सोचने को विवश करता है।

शैली और भाषा :

नरेंद्र कोहली की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और चुटीली होती है। वे सामान्य घटनाओं को इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि उनमें छिपी राजनीतिक विडंबनाएँ स्वतः उजागर हो जाती हैं। उनकी भाषा में व्यंग्यात्मक मुहावरे, उपमा, और रूपकों का कुशल प्रयोग मिलता है, जिससे उनकी कहानियाँ मनोरंजक होने के साथ-साथ विचारोत्तेजक भी बनती हैं।

निष्कर्ष :

नरेंद्र कोहली की व्यंग्य कथाएँ केवल हास्य उत्पन्न करने का साधन नहीं हैं, बल्कि वे गहरी सामाजिक और राजनीतिक चेतना को जन्म देती हैं। उनकी रचनाएँ हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ क्या है, और क्या हम सचमुच एक उत्तरदायी राजनीतिक व्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं या केवल उसके दिखावटी आवरण में जी रहे हैं। उनकी व्यंग्यात्मक दृष्टि आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी तब थी जब उन्होंने ये कहानियाँ लिखीं। समाज में आजकल बहुत विसंगतियाँ दिखाई देती है विशेषतः बेकारी, मिलावट, जमाखोरी, चोरी, कालाबाजारी, फैशन प्रत्येक स्थान पर दिखाई देती है। राजनीति हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। वोट, चुनाव प्रक्रिया, नेता, मंत्री, दल बदल, संसद या विधान भवन

तथा विपक्ष दल से संबधी कथनी एवं करनी का विसंगति को लेकर जो तीक्षण कटाक्ष किए गए है, वे राजनीति कथ्य में है। आज चलने वाले राजनीति राजनीति नहीं बल्कि दलनीति, सत्ता, नेतागण, शोषित जन, भ्रष्टाचार, गाँधीवाद की धज्जियाँ, सरकारी कर्मचारियों के कार्यकलाप आदि विषयों पर नरेन्द्र कोहली ने अपने व्यंग्य रचनाओं के द्वारा सही संदेष के साथ उभर कर सामने आई है।

संदर्भ-सूची

1. इश्क एक शहर का समग्र व्यंग्य-तीन-नरेन्द्र कोहली-पृ.सं. 865
2. राम लुभाया कहता है समग्र व्यंग्य-चार-नरेन्द्र कोहली-पृ.सं.124.
3. इश्क एक शहर का समग्र व्यंग्य-तीन-नरेन्द्र कोहली-पृ.सं.885
4. इश्क एक शहर का-समग्र व्यंग्य-तीन-नरेन्द्र कोहली-पृ.सं.885
5. इश्क एक शहर का समग्र व्यंग्य-तीन नरेन्द्र कोहली-पृ.सं. 93